श्री अभिनंदननाथ विधान

मंगल आशीर्वाद

प० पू० अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

लेखक

मुनि श्री प्रज्ञानंद

सम्पादक

कृति -
श्री अभिनंदननाथ विधान

मंगल आशीर्वाद -

प० पू० अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

लेखक –

मुनि श्री प्रज्ञानंद जी

सम्पादक

संस्करण - प्रथम 2021

प्रतियाँ - 500

मूल्य - सदुपयोग

प्राप्ति स्थान

निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिति

ई० 102 केशर गार्डन

सै० 48 नोएडा-201301

मो. 9971548889

9867557668

मुद्रण व्यवस्था

निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिति

शुभाशीष

प० पू० आचार्य श्री वसुनंदी मुनि

यत्फलं तपसा नास्ति, न योगेनं समाधिना।
तत्फलं लभते सम्यक्-जिनेन्द्र तव कीर्तिनात्॥

जो फल तप, योग व समाधि से भी प्राप्त नहीं होता है उस फल की प्राप्ति जिनेन्द्र भगवान्' की भक्ति, वंदना, स्तुति आदि से होती है।

सम्यक्त्व के पराग से परिपुष्ट जिनाराधना का पुष्प जिस भव्य जीव के चित्त में विकसित होता है उसका जीवन तो निःसंदेह आत्मोपकारक होता ही है साथ ही साथ परहित में भी उसका जीवन निमित्त बन जाता है। जिनाराधना एवं निर्ग्रन्थ सेवा की परंपरा सतत् प्रवाही सरिता के समान अनादि काल से प्रवाहमान है। अनंत भव्य जीवों ने इन दो चरणों के माध्यम से न केवल तीन रत्नों को प्राप्त किया है अपितु तीन लोक का साम्राज्य प्राप्त करने में भी समर्थ हुए। संप्रति दुःषमा नामक पंचमकाल भरतादि क्षेत्रों में प्रवर्तमान है इस युग में जिनाराधना भव सुख व शिव सुख की अचूक पगदंडी की तरह से सिद्ध होती है। जो कोई भी भव्यवर पुंडरीक जिनेंद्र भगवान् की स्वपरिणामों को निर्मल बनाने हेतु अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, भक्ति, स्तुति आदि करते हैं वे अपने चित्त से पाप पंक का प्रक्षालन करके सातिशय पुण्य के अनिर्वचनीय दिव्य रत्न प्राप्त करते है।

जिनेंद्र भगवान् की विशिष्ट गुणानुवाद रूप निबद्ध महापूजन व विधानादि भव्य जीवों के नव जीवन निर्माण के संविधान के प्रतीक ही हैं। विधान में संलग्न चित्त उसी प्रकार तृप्ति को प्राप्त होता है जिस प्रकार निर्धन अकूत धन पाकर, क्षुधातुर यथेच्छ भोजन पाकर, तृषातुर अमृतोष्म जल पाकर, दरिद्र निःसीम वैभव पाकर, रोगी सर्वारोग्य पाकर।

बाल योगी प्रज्ञा श्रमण अनगार श्री प्रज्ञानंद मुनिराज की पुण्यवर्द्धिनी वर्णवर्तिका/लेखनी स्वयं के परिणामों की निर्मलता का तो हेतु है ही व अन्य भव्यजनों के पुण्य का व परपंरा से मुक्ति का कारण भी है। उनके चित्तानन्दनी लेखनी से प्रसूत श्री अभिनंदन नाथ इत्यादि विधान जिनानुयायी श्रावक-श्राविकाओं के लिए पुण्य संग्रह/संचय में निमित्त बन रहे हैं उनके जीवन में सम्यक् ज्ञान, ध्यान, तपादि की वृद्धि निरंतर होती रहे। जिनाराधना, संयम-साधना उनके जीवन को सफल व सार्थक करें एतदर्थ उन्हें समाधिवृद्धि शुभाशीष...

सभी आराधक, उपासक व पाठकगण इसके माध्यम से लाभान्वित होंगे एतदर्थ धर्मवृद्धि शुभाशीष.....

ॐ अर्हं नमः

अनुक्रम

1. मंगलाष्टक
2. विधान की प्रारंभिक क्रियायें
3. अभिषेक पाठ (संस्कृत)
4. अभिषेक पाठ (हिंदी)
5. शांतिधारा
6. विनयपाठ
7. पूजन पीठिका
8. नवदेवता पूजन (आ० श्री वसुनंदी मुनिकृत)
9. श्री अभिनंदन नाथ विधान
10. समुच्चय महार्घ्य
11. शांतिपाठ (भाषा)
12. विसर्जन पाठ
13. श्री अभिनंदन नाथ जी चालीसा
14. श्री अभिनंदन भगवान की आरती
15. परम्पराचार्य अर्घावली
16. आचार्य श्री वसुनंदी गुरुवर की पूजन
17. आचार्य श्री वसुनंदी गुरुवर की आरती
18. श्री अभिनंदननाथ स्तवन
    (वृ. स्वयंभू स्तोत्र/आ०श्री समन्तभद्र स्वामी)
19. श्री अभिनंदनाथ भगवान का जीवन परिचय

श्री अभिनंदन नाथ भगवान का जीवन परिचय

माता का नाम	–	सिद्धार्थ
पिता का नाम	–	श्री स्वयंवर
वंश	–	इक्ष्वाकुवंश
जन्मस्थान	–	अयोध्या
चिन्ह	–	बंदर
गर्भ कल्याण तिथि	–	वैशाख शु० 6
गर्भ कल्याण नक्षत्र	–	पुनर्वसु
जन्म कल्याण तिथि	–	भाघ शु. 12
तज/दीक्षा कल्याण तिथि	–	माघ शु. 12
तज/दीक्षा कल्याण नक्षत्र	–	पुनर्वसु
ज्ञान कल्याण तिथि	–	कीर्तिक शु. 5
ज्ञान कल्याण नक्षत्र	–	पुनर्वसु
मोक्ष कल्याण तिथि	–	वैशाख शु. 7/6
मोक्ष कल्याण नक्षत्र	–	पुनर्वसु
आयु	–	50 लाख पूर्व
अवगाहना	–	350 धनुष
वैराग्य का कारण	–	गन्धर्व नगर देखा
दीक्षा वन	–	सहेतुक वन
दीक्षा वृक्ष	–	सरल/असन
सहदीक्षित	–	1000 राजा
छदमस्थ काल	–	18 वर्ष
देवगति से पूर्वभव का नाम	–	महाबल/विपुलवाहन
देवगति से पूर्वभव में पिता का नाम	–	श्री विमलवाहन
मुख्य गणधर	–	वज्रथमर/बज्र/वज्र नाभि
कुल गणधर	–	103
मुख्य श्रोता	–	मित्रभाव
मुख्य आर्यिका	–	मेरुषैणा
प्रथम आहारदाता	–	इन्द्रदत्त
कुल आर्यिका	–	3,30,600/3,30,000
सर्व ऋषि	–	3,00,000
यक्षु	–	महोश्वर
याक्षिणी	–	वज्र श्रृंखला
श्रावक	–	3 लाख
श्राविका	–	5 लाख
केवलीकाल	–	1 लाख पूर्व (8 पूर्वांग 18)
मोक्षस्थली	–	सम्मेद शिखर
कूट का नाम	–	ज्ञानेद कूट
तीर्थंकाल	–	9 लाख को. सा. + 9 पूर्वांग

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट-प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलायेऽष्टौ-वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥९॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

(1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ। (इन नौ स्थानों पर तिलक लगाये)

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। (सात बार पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छ्रद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाढ्य- ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

(मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे.....मासे.....पक्षे..... .तिथौ..... वासरे.....प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं.....कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

।।अभिषेक पाठ।।

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत-पद-प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये।।१।।

अथ पौर्वाह्णिक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-स्तव-वन्दना-समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(वसन्ततिलका)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि।।२।।

अथ जिनाभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ, तालध्वजा-तपनिवारक-भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

(अनुष्टुप)

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्-स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ-कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

(अनुष्टुप)

शातकुम्भीय-कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द-निर्भर-सुर प्रमदादि-गानैः,
वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।

त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुप)

तीर्थोत्तम-भवैनीरैः क्षीर-वारिभि-रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

(मालिनी)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

(वसन्ततिलका)

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्जैः
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्कजबन्धकल्पाः,
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा मुहूर्निज-करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र ! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

(वसन्ततिलका)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

(अनुष्टुप)

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःखा-पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च, व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्, भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन् ! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये।)

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

(ढाल– मंगल की) (छंद–अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण है त्रिभुवनधनी॥
अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मुणि राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने।।
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥
तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन-युत वंदत भयो।
तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसों कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करो।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरो॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयो।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित ह्वै, समवशरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्‌भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी॥

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यही वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भविजीव मस्तक नाय के।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गाय के॥4॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरामृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरें॥5॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसु-विधि-वश दुख सह्यो॥

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु बांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरो।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करो॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही॥

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूं॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं॥

पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन प्रचंड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो॥

आनंद-कारण दुख-निवारण, परम-मंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं॥
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही॥9॥

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार॥10॥

(॥इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ॥)

श्री शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं–अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा–अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष–कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु–विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम–डामर–विनाशनाय सर्व ग्रहारिष्ट शांति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/शांतिधारा कर्ता का नाम.... सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय अशोकतरु–सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं–बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य- शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति-प्रसादाद्लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद् भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्भवोपद्रव -शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्र वाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री..... .....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्मबलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

उपजाति छन्द

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥
॥इति शांतिधारा॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजा-विधि प्रारम्भ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धाम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥

एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहुनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्‌गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥

द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः॥
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥४॥

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव॥
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥५॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।
॥पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

(आ० वसुनंदी मुनि)

स्थापना

(छंद–गीतिका/हरिगीतिका)

त्रलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालयेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुःख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः

(नौबार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥
सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥
दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥
हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥
राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥
भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥
देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥
सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हत् आदि नवदेवता, सदा करे उश्वास।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास॥
(शान्तये... शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपामि)

विधान प्रारंभ
श्री अभिनंदननाथ विधान

॥ स्थापना ॥

(चाल-आओ बच्चों..... वंदे जिनवरम्.....)

आ जाओ अभिनंदन जिनवर, निर्मल चित कमलासन पर।
अभिनंदन करते भावों से, करो हमें भी अजर अमर॥
अभिनंदन का अभिनंदन कर, अभिनंदित हो जाऊँगा।
अभिनंदन का नंदन बन, अभिनंदन पूज रचाऊँगा।

दोहा

आह्वानन करते प्रभो, हे अभिनंदन नाथ।
आत्म प्रदेशों में बसो, हमको करो सनाथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।।

अष्टक

(चाल-भव वन में जी भर.....)

नैनों के कलशों में निर्मल भक्ति का नीर समाया है,
त्रयधार चरण अर्पित करने, तव भक्त शरण में आया है।
मम जनम-मरण के रोग मिटें, ये भाव उमड़कर आते हैं,
हे जन्म-जरा-मृत्युनाशक!, हम तेरी पूज रचाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

चंदन की शीतलता पाकर, नश्वर तन शीतल हो जाता,
चेतन संताप मिटाने को, जिन पद से है जोड़ा नाता।
शीतलता के अनुपम संगम, मम आतम को शीतल कर दो।
हे भव आताप निवारक जिन!, अपने समान मुझको कर लो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षत विक्षत हैं जग के सब पद, चौरासी में भटकाते हैं,
पर अभिनंदन के योग्य चरण, अक्षय पद प्राप्त कराते हैं।
इस हेतु धवल तंदुल अखण्ड, शुभ पुंज पदाग्र चढ़ाते हैं,
हे अक्षय पद के ईश! तुम्हें, श्रद्धा से शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।

पुष्पों की बगिया खूब खिली, पर अन्तर्मन ना खिल पाया,
अब सुनकर तेरा विरद प्रभो!, पुष्पों की भेंट चरण लाया।
तुम ब्रह्मचर्य के सौरभ से, निज चेतन को महकाते हो,
हे अक्ष विजेता, मोह दमक!, मन में बस तुम्हीं समाते हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय कामबाणविंध्वसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना विधि व्यंजन से मेरी, जिह्वा संतुष्ट ना हो पाई,
संतुष्ट हुई जब भक्ति वश, तेरी महिमा इसने गाई।
मन-वच-तन आह्लादिक सुमिष्ट, नेवज जिनवर चरणाग्र धरूँ,
हे निज आतम गुण भोगी जिन!, मैं क्षुधारोग विध्वंस करूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय क्षुधादिरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है ज्योतिर्मय दीपक ज्योति, पर झंझा से भय खाती है,
पर तव पद आश्रय पा ज्योति, शाश्वत निर्भय हो जाती है।
शुभ दीपों से तव आरती कर, मोहांधकार क्षय हो जाता,
हे केवल ज्योति के मालिक!, निज गीतों में तुमको ध्याता।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

निज शुक्ल ध्यान की ज्वाला में, तुमने कर्मों को दहन किया,
रागादि भाव कर कर मैंने, कलुषित कर्मों को ओढ़ लिया।
शुभ धूप दशांग हुताशन में, खेकर निज कर्म खपाता हूँ,
हे कर्म जयी त्रैलोक्य सुभट!, भक्तिवश तुम्हें बुलाता हूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

भौतिक फल की इच्छाओं ने, कीने नर जन्म सभी निष्फल,
तव भक्ति रस अमृत पीकर, पाऊँ शाश्वत मुक्ति का फल।
षट् ऋतुओं के उत्तम फल ले, शिवफल के भाव बनाये हैं,
हे मुक्तिपुरी के अधिनायक!, तव गुणनिधि पाने आये हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

है मूल्यवान वस्तु जग की, तव पद अनमोल कहाता है,
तेरे पावन पद पाने को, मम मन उस पर ललचाता है।
वसु विधि शुभ द्रव्य संजोकर हम, मन भक्ति में रंग लाए हैं,
हे त्रिभुवन के अनमोल रतन! अभिनंदन करने आए हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(छंद–गीतिका/हरिगीतिका)

(चाल– नव देवताओं की सदा...)

सोलह स्वपन लख मात सिद्धारथ जगत जननी हुईं,
वैशाख की षष्टी धवल, सम्पूर्ण सृष्टि खिल गई।
नृपति स्वयंवर के महल में, रत्नवृष्टि सुर करें,
शुभ गर्भ कल्याणक महोत्सव लख भविक भवदधि तरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख-शुक्ल-षष्ट्म्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नगरी विनीता स्वर्ग की, अल्कापुरी को छल रही,
जन्में जगत पालक हुई, सुखमय तिहुँ जग की मही।
द्वादश सुदी शुभ माघ को करते, महोत्सव सुरपति,
महिमा अनूपम जन्म की, कहि ना सकें कुछ गणपति।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघ-शुक्ल-द्वादशम्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ जन्म का अवसर बना, तप रूप आतम ज्ञान से,
विचरे दिगम्बर रूप धर, नशते करम निज ध्यान से।

चारित्र की घुट्टी लिए, आध्यात्म अंचल में पले,
चउ ज्ञान युत आतम निरखते, मुक्ति पथ पर तुम चले॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लद्वादश्यां तपकल्याणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ कार्तिकी पंचम शुकल, कैवल्य की ज्योती जगी,
सब द्रव्य गुण पर्याय झलके, स्वात्मगुण आतम पगी।
तुम दोष वर्जित देव अनुपम, दृष्टि नाशा पे किए,
सुरनाथ पूजित पद कमल, हम पूजते भक्ति लिए॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लपंचम्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु कर्म बंधन तोड़ तुम, निर्बन्ध हो शिवपुर वसे,
देहाभरण तज ज्ञान तनु युत गुण वसु भूषित लसे।
वैशाख धवलिम सप्तमी, शुभ तप्त सप्तम पा लिया,
निर्वाण कल्याणक महोत्सव, पूजकर चित शुध किया॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख-शुक्ल-सप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

(दोहा)

सुख शांति आधार का, अभिनंदन शुभ नाम।
शतेन्द्र वंदित देव को, वंदू नित वसुयाम॥

(चौपाई)

जय श्री अभिनंदन गुण सागर, अभिनंदित हों तव गुण गाकर।
पूजूँ अर्चूं मंगल गाऊँ, तव चरणों में बलि-बलि जाऊँ॥1॥
जो भी आता शरण तिहारी, जन्मों के अघ कटें दुखारी।
चित में करता जो तव चिंतन, शुद्ध होय मन-वच-तन चेतन॥2॥

दोष अठारह रहित जिनेश्वर, वीतराग सकलज्ञ हितेश्वर।
सौम्यशांत छवि भवि मन भाती, तव पद भक्ति दे शिवपाती।।3।।
आखण्डल या इन्दु दिवेश्वर, मुनिगणपति या असुर नरेश्वर।
सब मिल तव गुण महिमागाते, भक्ति युत पद शीश झुकाते।।4।।
तुममें ज्ञान अनंत समाया, अंत रहित दर्शन गुण पाया।
बल अनंत आतम सुखभोगी, नमन कोटि अभिनंदन योगी।5।।

(दोहा)

अभिनंदन जिनराज तुम, पावन परम पुनीत।
गुण वर्णन कैसे करूँ, महिमा वर्णनातीत।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(दोहा)

जलधारा के संग ही, पुष्पांजली चढ़ाय।
अभिनंदन सर्वत्र हो, भाव यही मन लाय।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत।।

।।अथ प्रथम वलयोऽपरि पुष्पांजलि क्षिपामि।।

प्रथम वलय

नव केवल लब्धियाँ

(छंद-चउबोला) (चाल- छम-छम चाली इन्द्राणी /पारस पदमा और महावीर.....)

मोह कर्म की सात प्रकृतियाँ, नशकर गुण सम्यक्त्व लहा,
क्षायिक भाव के प्रकटिकरण से, पाया आतम सौख्य महा।
नव केवल लब्धि धारी को, नवकोटि से नमन करें,
अभिनंदन के नंदन जग में, रहते नित आनंद भरे॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकसम्यक्त्वलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

हैं इक्कीस प्रकृतियाँ चारित मोहक, चारित की घातक,
करके दलन लहा फिर तुमने, क्षायिक चारित्र सुखदायक।
नव केवल लब्धि.....॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकचारित्रलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पन विध ज्ञानावरण हनन कर, ज्ञान अनंत हुआ क्षायिक,
सर्व तत्त्व ज्ञायक हो जिनवर, भवदधि तारक शुभ नाविक।
नव केवल लब्धि.....॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नवविध दर्शन आवरणी नश, क्षायिक दर्शन प्रकटाया,
सर्वलोकदर्शी का दर्शन, देता शाश्वत सुख छाया॥
नव केवल लब्धि.....॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलदर्शनलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दानान्तराय विधि के कारण, प्राणी हो जाता नादान,
हे महादानी आप सरीखा, दे सकता ना कोई दान।
नव केवल लब्धि.....।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकदानलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लाभान्तराय विधि प्राणी के, भव-शिव सुख सब लाभ हरे,
क्षायिक लाभ लब्धि धारी के, चरणों में सब काज सरे।।
नव केवल लब्धि.....।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकलाभलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भोगान्तराय विधि विध्वंसक, आप हुए आतम भोगी,
किस विध विधि विध्वंस करें, बन सकें आप सम हे योगी।
नव केवल लब्धि.....।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकभोगलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पुन पुन जिसको भोग सकें हम, वो उपभोग कहाता है,
आतम गुण उपभोगी जिन का, पूजन ही भव त्राता है।
नव केवल लब्धि.....।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकोपभोगलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वीर्यान्तराय विधि अन्तक तुम, अनंत बलशाली स्वामी,
वह बल मुझको प्राप्त करा दो, बनूँ आप सम शिवगामी।।
नव केवल लब्धि.....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायिकवीर्यलब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

महार्घ्य

(चाल- श्रीमत वीर हरे भव पीर.....)

घाति चतुष्टय नष्ट किया, फिर आतम वैभव को है निखारा
क्षायिक नवलब्धि के स्वामी, भव जल में बस तू ही सहारा।
वीतराग छवि अनुपम लखकर, नशता जन्मों का अघ सारा,
ऐसे अभिनंदन को वंदन, श्रद्धा से वसुयाम हमारा।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवकेवललब्धिसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

करूँ जिन गुणगान, अभिनंदन जिन चंद का।
लहूँ शीघ्र निर्वाण, अष्ट कर्म को नष्ट कर।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

।।अथ द्वितीयवलयोऽपरि पुष्पांजलि क्षिपामि।।

द्वितीय वलय

(18 दोष रहित जिनदेव)

(छंद–अडिल्ल)

(चाल-सोलहकारण भाय...../नेमि का सेहरा सुहाना....)

क्षुधा रहित जिनदेव, आत्म संतृप्त हुए,
शाश्वत आत्म गुणामृत में संलिप्त हुए।
दोष विवर्जित देव श्री अरिहंत हैं,
अभिनंदन को वंदन नित्य अनंत हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षुधादोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जनम-जनम की तृषा, आपने विनशाई,
आतम रस अमृत पीते तुम जिनराई।
तव दर्शन की प्यास लिए मैं आया हूँ,
तुम मेरे विश्वास यही मन लाया हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं तृषादोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जरा रोग से प्राणी जब घिर जाता है,
अर्द्धमृतक सम जर्जर हो दुःख पाता है।
तव तन में यह जरा कभी ना आती है,
परमौदारिक देह भविक मन भाती है॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं जरादोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रोगों का आतंक मनुज पर छाता है,
औषधि सेवन करके भी अकुलाता है।

रोगों का आतंक तुम्हें ना तंग करे,
रोग मुक्त हों वो जो जिनपद हृदय धरे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोगदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन भक्ति बिन लाखों जनम गवाये हैं,
पर जन्मों का अन्त नहीं कर पाए हैं।
जन्म विनाशक के पद में मम माथ हो,
अन्त जनम तक अभिनंदन का साथ हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बार-बार मृत्यु ने हमको मारा है,
मरण समाधी का ना लिया सहारा है।
मृत्यु की मृत्यु कर के तुम हुए अमर,
मृत्यु विनाशक अभिनंदन का सच्चा दर।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मरणदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अस्त्र शस्त्र वो धारे जो भयभीत हों,
कर्म जयी जिनदेव आप निर्भीक हो,
निर्भय हों जिनको प्रभु तुमसे प्रीत हो।
भय भी हो भयभीत जिनेश पुनीत हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं भयदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समवशरण में अद्भुत वैभव था छाया,
पर अचरज का भाव ना तुमको छू पाया।

विस्मय दोष विहीन श्री जिन अभिनंदन,
भक्तिभाव वश करूँ नमन मेटो क्रंदन।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं विस्मयदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

राग भाव निर्लिप्त वीतरागी स्वामी,
निज आतम में लीन आप अन्तर्यामी।
राग आग आतम को पल-पल दहकाती,
तव गुण अनुरागी हम ज्यों दीपक बाती।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं रागदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्वेष भाव न किंचित् तव सम्मुख आया,
निंदक को भी मुक्ति पंथ है दर्शाया।
भाव यही कि बैर भाव ना मन लाऊँ,
धर उर समता वीतद्वेष जिन गुण गाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वेषदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मोहमहामद पीकर निज को भूला हूँ,
चतुर्गति के झूले में मैं झूला हूँ।
हे निर्मोही! किया मोह का अंत है,
मोह विनाशक को मम नमन अनंत है।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चिंता चिता समान स्वयं से दूर करे,
पर, चिंतन से चेतन सुख भरपूर भरे।

चिंता-मुक्त जिनेश सभी चिंता हरते,
तव गुण के चिंतक भवि भव सागर तरते॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतादोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

क्षणभंगुर उपलब्धि पर मैं मद करता,
हे मदहारी! इसीलिए भव भव फिरता।
मद को तज तुमने पाई निज की मस्ती,
मद का दमन करूँ आकर तेरी बस्ती॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं मददोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सर्वदर्शि बन निद्रा पर जय पाई है,
अनिमिष नाशा दृष्टि मम मन भाई है।
श्री अभिनंदन नाथ हमें वरदान दो,
आत्म जागृति हो हमको वो ज्ञान दो॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं निद्रादोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

मोही करता दुख आने पर खेद है,
क्योंकि करता ना निज पर का भेद है।
हे विज्ञानी! खेद ना तुमको किंचित हो,
तव भक्ति से मम आतम अभिसिंचित हो॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं खेददोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

स्वेद रहित जिनदेव आप जग हितकारी,
हे अरिहंत पवित्र सुनिर्मल तन धारी।

तव गुण गा हम सर्व मलों से वर्जित हों,
जिन चरणों में पुण्य कोष सब अर्जित हो॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेददोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

रति भाव निर्मुक्त मेरु सम अविकारी,
परम दिगम्बर रूप आप्त भवि हितकारी।
मम मन भी रति भावों से निर्लिप्त हो,
तव भक्ति से मम आतम अभिषिक्त हो॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरतिदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

मोहनीय के तीव्र उदय से हो उद्वेग,
तीर्थंकर बन नाशा तुमने हे जिनदेव।
सौम्य भाव तव मुख मण्डल पर छाये हैं,
सुराधीश ने इसीलिए गुण गाए हैं॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं शोकदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

(त्रिभंगी छंद)

सुर नर मुनि वृंदा, जिनवृष चंदा, जय अभिनंदा, सुखकारी,
काटे भव फंदा, कर अघ मंदा, भवि आनंदा, हितकारी।
हे गुणरत्नाकर, दिव्य दिवाकर, श्रेष्ठ सुधाकर, नमन करूँ,
तव पद को ध्याकर, शीश झुकाकर, हृदय वसाकर, मोक्ष वरूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशदोषरहिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा

मन-वचन-तन अरुचेतना, करूँ समर्पण आज।
अभिनंदन पद पूजकर, बनूँ लोक सरताज॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

॥अथ तृतीय वलयोऽपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

तृतीय वलय

(34 अतिशय + अष्टप्रातिहार्य + सिद्धों के आठ गुण)

(जन्म के 10 अतिशय)

तर्ज- उमरिया रह गई थोड़ी....

अतिशयकारी सुन्दर तन, अघहारी मोहक अनुपम।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयरूपवान्-जन्मातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आती सुगन्ध सुखकारी, तव तन निर्मल अविकारी।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धित तन जन्मातिशय गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है स्वेद रहित तन पावन, जिसकी महिमा मन भावन।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेदाभाव-जन्मातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है निर्विकार तव काया, ना हो निहार ये माया।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं निहाराभाव-जन्मातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

हित मित प्रिय जिनवर वाणी, भवि जीवन को कल्याणी।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितमितप्रियवचन-जन्मातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तुम महाबली अलबेले, तिहुँ जग में आप अकेले।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्यबलजन्मातिशयगुणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बहे रुधिर क्षीरवत् तन में, वात्सल्य भाव चेतन में।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिर जन्मातिशयगुणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ लक्षण तन में छाये, अष्टोत्तर सहस बताये।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणतन जन्मातिशयगुणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है समचतुस्र संठाना, अतिशयकारी भगवाना।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्र संस्थान जन्मातिशयगुणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सर्वोत्तम संहनन धारी, वज्रंगबली उपकारी।
दस अतिशय जनम के नामी, पूजूँ अभिनंदन स्वामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहनन जन्मातिशयगुणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(चाल- आदिनाथ भक्तामर मंगलगीता)

अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।टेक।।
हो सुभिक्ष शत योजन में, वरषे अमृत कण कण में।
जिनवर जहाँ विराज रहे, समृद्धि का ताज रहे।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकयोजन-सुभिक्षता केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

पंच सहस धनु भू ऊपर, गमन करें नभ में प्रभुवर।
भव्य पुण्य की बलिहारी, जिसने खींचे त्रिपुरारी।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमन-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

परमौदारिक है तव तन, जिससे दिखते चतुरानन।
मुख मुद्रा में आकर्षण, शुभकारी हैं जिनदर्शन।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दिशमुखमण्डल-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

बैरी क्रूर व हिसंक हों, या कोई नर वंचक हों।
जो तव शरणा आते हैं, दया युक्त हो जाते हैं।।

अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभावाभाव-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

होता ना उपसर्ग कभी, तव अभिनंदन करें सभी।
जो तुमरा सत्संग करे, उसे ना कोई तंग करे।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपसर्ग-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

करते ना आहार कवल, फिर भी सब में तुम्हीं सबल।
केवलज्ञानी की महिमा, सच्चे देव की ये गरिमा।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाराभाव-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

जग की सारी विद्यायें, तव पद में आश्रय पायें।
हे सब विद्या के स्वामी, नमन तुम्हें अन्तर्यामी।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्या-ईश्वरत्व-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

बढ़ते नहीं कभी नख केश, अतिशय ये कैवल्य विशेष।
ज्यों के त्यों रह जाते हैं, जब केवल गुण पाते हैं।।

अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिविहीन-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

नाशा पर ठहरी दृष्टि, अनिमिष हो देखें सृष्टि।
ऐसे जिन को नमन करूँ, अनिमिष लख नित दर्श करूँ
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृष्टिपट-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

मणियों सी सुंदर काया, जिसकी ना पड़ती छाया।
कोटि सूर्य सम चमक रहा, चेतन जिसमें दमक रहा।।
अभिनंदन जिन के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
उनके केवल के अतिशय की, मंगल पूज रचाता हूँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं तनछायारहित-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

सुरकृत 14 अतिशय

(चाल-नरेन्द्रं फणिन्द्रं....)

अरध मागधी मेरे जिनवर की वाणी,
श्रवण से तरे शीघ्र संसार प्राणी।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्धमागधीभाषा-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

जन्मों के बैरी तजें बैर क्षण में,
बने मित्र आपस में तेरी शरण में।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभाव सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ना ओले ना सोले ना तूफां सताये,
जहाँ आप राजे हों निर्मल दिशायें।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशदिशानिर्मल-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

षट् ऋतु के फल फूल संग संग खिले हैं।
जहाँ नाथ तुमरे दरश शुभ मिले हैं।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्ऋतुफलितपुष्पफल-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

नहीं मेघ गर्जन ना बिजली कड़कती,
सुनिर्मल गगन में करें देव भक्ती।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाकाश-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

आदर्शवत् पृथ्वी हो स्वच्छ निर्मल,
आ दर्श पाओ कटें सारे अघमल।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पणवत्-पृथ्वीतल-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

भवि पुण्य से आप चलते गगन में,
रचे देव स्वर्णिम कमल पद-कमल में।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं चरणकमलतलस्वर्णकमल-सुरकृतातिशय गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

जयघोष नभ से करें देव सारे,
जयवंत हों नाथ विधि बंध टारे।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभसिजयघोषसुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

बहे शुभ सुगंधित सुशीतल समीरा,
लुभाये जो मन को हरे तन की पीरा।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंदसुगंधपवन-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

करें देव वर्षा सुवारि सुगंधित।
सुखद-शांतिदायक, करे चित्त नंदित।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं गन्धोदकवृष्टिसुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

पवन देव भूमि की करते बुहारी,
तृणादिक सभी दूर करते दुखारी।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कंटकभूमि-सुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

तव भक्ति में झूमती सारी सृष्टि,
जिसे देख सम्यक् हुई भव्य दृष्टि।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षितसृष्टि-सुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

वृषचक्र गतिमान त्रय तम विनाशक,
तभी आपको कहते वृष चक्र शासक।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रगामिधर्मचक्र-सुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

मंगल मयी द्रव्य वसुविध हैं साजे,
जहाँ धर्मनायक चलें या विराजे।।
अतिशय ये चौदह नित देव करते।
भक्ति के फल से मुक्ति को वरते।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्य-सुरकृतातिशय-गुणमण्डिताय श्रीअभिनंदननाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

(अष्ट प्रातिहार्य)

शेर चाल

(चाल– जय-जय श्री अरिहंत....)

राजे अशोक तरु समीप स्वर्ण सिंहासन,
त्रय छत्र युक्त करें तिहुँ लोक का शासन।
आभा महान दुंदुभि के नाद सुहाने,
चौंसठ चंवर ढुरायें देव भक्ति बहाने॥
नभ से करैं सुरेश सतत् पुष्प की वृष्टि,
तव दिव्य ध्वनि खोलती सम्यक्त्वमय दृष्टि।
वसु प्रातिहार्य से सजे जिनदेव हमारे,
वसु अंग युत नमूँ तुम्हें वसुयाम निहारें॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरुआदि-सत्प्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

(सिद्धों के अष्ट गुण)

हे नंत दर्श ज्ञान कुंज अरु महाबली,
सम्यक्त्व सुख अनंत युक्त घातिया दली।
सूक्ष्मत्व व अवगाहनत्व गुण संयुक्त हो,
अगुरुलघु व अव्याबाध युक्त मुक्त हो॥
नश अष्ट कर्म अष्ट गुणों युक्त हो साजे,
देहाभरण उतार लोक शीश पे राजे।
हे सिद्ध रूप ईश प्रभु शुद्ध दिवाकर,
मैं पूजता हूँ भक्ति से निज शीश झुकाकर॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टगुणसंयुक्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

महार्घ्य

(चाल–श्रीमत वीर हरे भवपीर.....)

चौंतिस अतिशय धारि जिनेश्वर सुरगण भी जिनके गुण गायें,
नंत चतुष्टय गुण के नायक को मुनिनायक भी शीश नवायें।
प्रातिहार्य वसु संयुत स्वामी कर्म रहित शिव सुख दरशायें,
ऐसे अभिनंदन जिन का वंदन, कर हम भी मुक्ति पद पायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहत्सिद्धपरमेष्ठिने सर्वमूलगुणप्राप्तये श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप–ॐ ह्रीं अर्हं सकलात्मप्रदेश-नंदाय श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ हित, भविजन के सरताज।
अभिनंदन वंदन करूँ, जय-जय श्री जिनराज॥

(छंद-ज्ञानोदय) (चाल-हे चन्द्रप्रभु)

श्रीमज्जिनेन्द्र तिहुँ जग नायक, हे परमातम मंगलकारी,
आनंदरूप सब दुखहर्ता, बंदू अभिनंदन हितकारी।
तुमने स्वरूप अपना जाना, फिर लीन हुए निज आतम में,
हे महिमाशाली तीर्थंकर आ बसो हमारे चेतन में॥1॥
सोलहकारण भाकर तुमने तीर्थंकर का पद पाया है,
चौथे जिनवृष नायक बनकर शिवसुख का पथ दर्शाया है।
सोलह संकेत दिए माँ को, साकेत नगर में आने को,
तव मात-पिता के पद पूजें, सुर अतिशय पुण्य कमाने को॥2॥
तुमको जनकर सिद्धारथ माँ, जग जननी माता कहलायीं,
स्वयंवर श्री पितु के महलों में, शुभ रत्नराशियाँ वरषाईं।
मेरू पर सुरपति द्वारा तुम, क्षीरोदधि से अभिषिक्त हुए,
सौधर्म करे ताण्डव अचरज, तिहुँ लोक शोक से रिक्त हुए॥3॥
शुभ सहस्र अष्ट लक्षणधारी, वानर लक्षण तव पद चमके,
काया साढे त्रय शत उतुंग, कंचन सुरूप अद्भुत दमके।
स्वर्गों के देव सभी आकर, किंकरवत् शीश झुकाते हैं,
अभिनंदन जिन को वंदन कर, सारे विकल्प छट जाते हैं॥4॥
दस अतिशय जन्म समय के शुभ, तव पुण्य की महिमा हैं गायें,
उपमायें छोटी पड़ जातीं, अनुपम गुण हम कैसे गायें।
भौतिक जग वैभव को भोगा, फिर तृणवत् छोड़ा आडम्बर,
अंतर में आतम ज्योति जली, पहने तुमने दस दिग् अम्बर॥5॥

सब सिद्धों का सुमरन करके, कीना निज भावों को निर्मल,
निज भाव विशुद्धी के बल से, प्रकटा मनपर्ययज्ञान विमल।
संयम तप चारित है दुर्लभ, जिसको प्रभो तुमने धार लिया,
निज आतम में फिर लीन हुए, चउ घाति रिपु संहार किया॥6॥
दृग ज्ञान सौख्य अरु बल अनंत, पाकर केवलि भगवंत हुए,
परमौदारिक अति पावन तन, संयुक्त आप अरिहंत हुए।
धनपती रचित तव धर्म सभा, शुभ समवशरण कहलाती है,
सबको समान शरणा मिलती, जिसकी शोभा मन भाती है॥7॥
रागादि विवर्जित सौम्य रूप, तव छवि लख चित निर्मल होता,
दर्शन से सब संकट टलते, अघ रिपु आकर तव पग धोता।
दस अतिशय केवल के पाकर, तुम जगती का सब दुःख खोते,
जिनवर का अभिनंदन करने, सुरकृत चौदह अतिशय होते॥8॥
खुद से अनुबंध कराती है, हे वीतराग तेरी वाणी,
कर्मों के बंधन खुल जाते, भव सागर तरते भवि प्राणी।
नव लब्धि रमा के कंत हुए, वसु प्रातिहार्य संयुक्त प्रभो,
मुक्ति पथ पर बढ़ चलें कदम, हमको दो ऐसी शक्ति विभो॥9॥
अनिमिष नाशा दृष्टि रखकर, सम्पूर्ण विश्व अवलोक रहे,
कर आत्म प्रदेशों में विहार, युगपत अनेक सब लेख कहे।
तुम योग रहित योगीश हुए, हो वसुगुण निधियों से मण्डित,
सम्मेदशिखर की पुण्य धरा, कीने विधि शैल सभी खण्डित॥10॥
आयु पचास लख-पूरव की, पूरण कर शाश्वत सिद्ध हुए,
तज अखिल विभावों का बंधन, तुम अविनाशी अविरुद्ध हुए।
हे आतम गुण वसुनंदी युत, मम भक्ति को स्वीकार करो,
तुम सम मम रूप स्वरूप बने, मेरे सब संकट क्लेश हरो॥11॥

तुम वसुनंदी गुण भण्डारी, हे दया रूप महिमा मण्डित,
हे मेरू सम निश्चल अकंप, तव पाद पद्म सुर नर वंदित।
बस यही भावना है मेरी, हो गुरु आशीष सदा मुझ पर,
जब तक शाश्वत घर ना पाऊँ, तेरा दर ही हो मेरा घर।।12।।

(दोहा)

जिन गुण राशि अनंत है, कौन करे विस्तार।
अभिनंदन सुमरन करूँ, निशदिन श्रद्धा धार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमः जयमाला संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(दोहा)

शांत शुद्ध चिद्रूप है, सकल सौख्य आधार।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, अभिनंदन सुख सार।।

।।शांतये...शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

।।इति।।

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥

कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल-थल-आकाश-गुहा-पर्वत-नगरवर्ति-ऊर्ध्व-मध्य-अधोलोकेषु विराजमान- कृत्रिम-अकृत्रिम-जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान-विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च-भरत-पञ्च-ऐरावत-

दशक्षेत्र-सम्बन्धि-त्रिंशत्-चतुर्विंशतिगत-विंशत-उत्तर-सप्तशत-जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धि-द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर-कैलाश-चम्पापुर-पावापुर-गिरनार-सोनागिरि-राजगृही-मथुरा-शत्रुञ्जय-तारङ्गा-कुण्डलपुर आदि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-चन्देरी-पपौरा-अयोध्या-चमत्कारजी-महावीरजी-पद्मपुरी-तिजारा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे मेरु दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक॥

दिव्य विटप बहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को॥

(वसन्ततिलका)

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥

(स्रग्धारा)

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुवर की पूजन

रचयिता–आर्यिका वर्धस्वनंदनी

स्थापना

(तर्ज-श्रीमद् वीर हरें)

सूरिवर श्री शांतिसागर, पाय जयकीर्ति गुणधारी,
श्री देशभूषण भारत गौरव, सूरिवर यश जिनका भारी।
सितपिच्छी धारी श्री विद्यानंद के नंदन जय हो तुम्हारी,
वसुनंदी गुरुदेव पधारो, उर में है ये विनय हमारी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर सवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहिंतो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

(तर्ज- रोम रोम से.....)

निर्मल जल निर्मल चित हेतु, गुरु चरणों में लाए।
वचनामृत तव प्यास बुझाता, अतः शरण में आए॥
पूजन करने आये अलिवत्, तव पद के अनुरागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय् जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत ऊष्ण वा क्षुधा तृषादिक, कठिन परीषह सहते।
क्रोध आदि की नहीं ऊष्णता, अनुपम शीतल रहते॥
चंदन से आदि शीतल गुरुवर, निश्छल सरल स्वभावी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग में रहकर के भी, क्षरातीत गुण ध्यायें।
पुरुषार्थी निज अक्षय पद के, अक्षत पूज रचायें।।
गुरुदेव तव सम बनने की, मेरी प्रीत भी जागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः कामबाण अक्षय पद प्राप्तये अक्षत निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों की अनुपम सुरभि, से आनंद मनायें।
पुष्प से कोमल गुरु चरणों में, पुष्प चढ़ा हर्षायें।
नहीं काम अब रहा काम से, अतः लगन मम लागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

अतंराय उपवास आदि भी, समता युत हो सहते।
बाधा के तूफानों में भी, नहीं कभी कुछ कहते।।
चरुवर से पूजें समता रस, पाएँ परम प्रभावी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों के अन्वेषक, वैज्ञानिक अनुपम् ज्ञानी।
तव प्रयोगशाला प्रयोग, करते विस्मित हे ध्यानी।।
दीप चढ़ाकर ज्ञान दीप की, आशा मम मन जागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविध कर्मों को दहकाने, वेष दिगम्बर धारा।
वातावरण आपके गुण से, हुआ सुगंधित सारा।।

उसी गंध से हम खिंच आए, तव पूजन को त्यागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रत्न बहुमूल्य धार, तुम सर्वश्रेष्ठ कहलायें।
देव इंद्र नर असुर सभी मिल, तव गुण गौरव गायें॥
रत्नत्रय पा तुम सम मुनि बनने की भावना जागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः महामोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम ध्यानी तव अंतर में, ज्ञान सिंधु लहराता।
मूलाचार के दो दर्पण, चारित्र यही बतलाता॥
तीर्थंकर सी सूरत जिनकी, गुरु सिद्ध जो भावी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनीन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी गुरु, सरल स्वभावी आप।
रत्नत्रय से जड़ित हो, नख से शिख तक आप॥

(तर्ज- हे चन्द्रप्रभु....)

श्री वसुनंदी गुरु के चरणों में, अपना शीश झुकाता हूँ,
भक्ति से प्रेरित होकर के, गुरु गौरव गाथा गाता हूँ।
चारित के हिमगिरि हो अंकप, निश्चल मेरु से खड़े हुये,
बाधाओं के तूफानों में भी संयम हेतु अड़े हुये॥1॥
देख दिगम्बर चर्या को मन श्रद्धा से झुक जाता है,

मूलाचार के दर्पण हो, संयम तेरा बतलाता है।
मिशरी से भी मीठी वाणी, जादू सब पर कर जाती है,
स्याद्वादमयी, निर्दोष, ज्ञान से पूर्ण, सभी को भाती है।।2।।
विद्वत्ता और तपस्या का शुभ संगम दुर्लभ ही जानो,
गुरु श्रेष्ठ तपस्वी ज्ञानवान्, प्रभुवर की मूरत ही मानो।
दर्शन कर मन में भाव उठे, तीर्थंकर जगती पर होते,
वो तुमसे ही दिखते होंगे, जो धर्म बीज जन-जन बोते।।3।।
मुस्कान खिले चेहरे पर जब भक्तों की दृष्टि जाती है,
सब के चित को मोहे तत्क्षण, खुशियाँ सबके मन छाती।
तेरे शुभ चरण जहाँ पड़ते, स्थान तीर्थ वह बन जाता,
हो समवशरण सा लगा हुआ, दर्शन कर मन भी भर जाता।।4।।
सम्यग्दर्शन गुरु की भक्ति, प्रवचन सुज्ञान कहे जग में,
अनुसरण करें तेरे पथ का, संयम के भाव जगे मन में।
तुमसे संयम का परिपालन, तुमसे आनंदमयी दृष्टि,
तुम से ही है सारी विद्या, तुम में ही है मेरी सृष्टि।।5।।
शब्दों की सीमा में गुरु को, बाँधू दुस्साहस है मेरा।
आकाश समा निर्लेप शुभ्र, अनुपम व्यक्तित्व गुरु तेरा।।
है देव! न हो मुक्ति जबलौं तबलौं हमको तव चरण मिले।
भव-भव में तेरे चरणो में, श्रद्धा संयम के पुष्प खिले।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री वसुनंदी मुनिन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा।।

घत्ता– गुरुवर अभिनंदन, संयम वंदन, है ऐसा मैंने जाना,
हे संयम दाता, मम मन त्राता, तुमसे निज को पहचाना।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

शांति शांति धारा.....।।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग आचार्य श्री वसुनंदी मुनिराज की

आरती

धरती खड़ी अम्बर खड़ा जिनके सहारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलके सारे।
सूरज जिनका जिनके हैं, चांद सितारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलके सारे॥
आश्विन कृष्ण अमावस्या को, धरती पे आये थे,
ऋषभ त्रिवेणी संग, सब हर्षाये थे।
दूर हुए तब ही, धरा से अंधियारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलके सारे॥
सूरज जिनका....॥1॥

तप से तपायी देह, कुंदन बनाई है,
भक्तों में ज्ञान की, ज्योति लाई है।
साध रहे मन बिन, साधन सहारे,
आरती गुरुवर की, उतारो मिलके सारे॥
सूरज जिनका....॥2॥

विद्यानंद गुरुवर के शिष्य कहाये हैं,
आचार्य वसुनंदी गुरुवर हमने पाए हैं।
भक्त कहें कि, गुरुवर प्राण हैं हमारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलके सारे॥
सूरज जिनका....॥3॥

गुरुवर सब शिष्यों के, मध्य ऐसे लागे हैं,
तारों बीच जैसे शीतल, चन्द्रमा विराजे हैं।
लेकर रूप वीरा का, धरा पे अवतारे।
आरती गुरुवर की उतारो मिलके सारे॥
सूरज जिनका....॥4॥

श्री अभिनंदननाथ भगवान की आरती

ॐ जय अभिनंदन देवा, स्वामी जय अभिनंदन देवा।
सुर गणेश नागेन्द्र सभी मिल करते तव सेवा॥
ॐ जय.....।टेक॥

सुरगपुरी से चयकर, अवधपुरी आए।
दिव्य रतन वर्षाकर, सुरगण हर्षाएं।
ॐ जय.....।टेक॥

मात सिद्धारथ उर से,जनमे शिवराई।
तात स्वयंवर नृप संघ, तिहुँ जग सुखपाई॥
ॐ जय.....।टेक॥

शंख दुंदुभि भेरी, घण्टा नाद भयो।
ताडंव नृत्य कियो सुर, जिन अभिषेक कियो॥
ॐ जय.....।टेक॥

भौतिक सुख की रीति, तुमको ना भाई।
गही दिगम्बर दीक्षा, वैभव ठुकराई॥
ॐ जय.....।टेक॥

इन्द्रदत्त नृप के घर, प्रथम आहार लियो।
इन्द्रों ने फिर नभ से, पंचाश्चर्य कियो॥
ॐ जय.....।टेक॥

चार घाति विधि नशकर, केवल बोधि लही।
गिरि सम्मेद पे आकर, पाई वसु मही॥
ॐ जय.....।टेक॥

तुम ही चतुर्थ तीर्थंकर, शिव सुख भर्तारी।
विष्णु ब्रह्मा ईश्वर, तुम ही त्रिपुरारी॥
ॐ जय.....।टेक॥

जगमग तव चरणों में, रतनन दीप जले।
आरती करके थारी, कर्म कलंक गले॥
ॐ जय.....।टेक॥

श्री अभिनंदन जिन चालीसा

आनंदकारी पंचगुरु, प्रणमूँ चित्त बसाय।
धर्म जिनागम चैत्य जिन, चैत्यालय सुखदाय॥
शाश्वत नंदन दायका, अभिनंदन जिनराज।
चालीसा लिखकर लहूँ, निजानंद का साज।
अभिनंदन जिन का अभिनंदन, भविजन करते तव पद वंदन।
चौथे तीर्थंकर कहलाये, चतुर्गति से हमें छुड़ाये॥1॥
स्वर्ग से च्युत होने के पहले, बरषे छः माह रतन घनेरे।
पन्द्रह माह तक हुई सुवर्षा, नरनारी सुरगण मन हर्षा॥2॥
पिता स्वयंवर नृप के दुलारे, माँ सिद्धार्थ की आँख के तारे।
शुक्लषष्ठी वैशाख सुनामी, गर्भ विषै आये जग स्वामी॥3॥
शुभ सोलह सपने माँ देखे, पिता स्वयंवर शुभ फल लेखे।
सेवा में तव रही देवियाँ, रात-दिना माँ को दे खुशियाँ॥4॥
माघ शुक्ल द्वादश शुभ आई, नगर अयोध्या बजी बधाई।
इन्द्रासन थर-थर कंपाए, तिहुं जग में आनंद हैं छाये॥5॥
शंख सिंह घंटा अरु भेरी, सुर घर में भये नाद घनेरी।
चतुर्निकाय सुरेश्वर आये, भक्ति वश अति मोद मनाये॥6॥
ऐरावत लाए शचिकंता, सहस्रनयन कर लख भगवंता।
पाण्डुक वन अभिषेक करायो, क्षीरोदधि को नीर बहायो॥7॥
भक्तिवश शचि प्रभु तन साजा, भव-भव का तब सब अघ भाजा।
सुरपति ताण्डव नृत्य है कीना, आनंदनाटक किया नवीना॥8॥
सुरगण बाल सखा बन आते, दिव्यामृत मय व्यंजन लाते।
नानाविध दिव वस्त्राभूषण, जिससे आलंकृति हो तव तन॥9॥

पगतल वानर चिह्न सुशोभित, कनक कान्तिमय तन मनमोहित।
अतिशय सुन्दर रूप तुम्हारा, कामदेव लज्जित हो हारा।।10।।
साढ़े तीन शतक धनु काया, सहस्र आठ लक्षण युत माया।
काश्यप गोत्र कियो शुचि भाई, इक्ष्वाकु कुल जन्मे राई।।11।।
बाल्यकाल की लीला न्यारी, अचरजकारी सुख भण्डारी।
मण्डलीक पद का सुख भोगा, तव शासन सम सुख ना होगा।।12।।
बहुतकाल यों सुख से बीता, इक गन्धर्व नगर है दीखा।
जातिस्मरण हुआ प्रभु जब ही, मन वैराग्य हुआ झट तब ही।।13।।
पंचम स्वर्ग के ब्रह्म ऋषीश्वर, संस्तुति करते धन्य जिनेश्वर।
छोड़े पद वैभव संसारी, तप संयम की डगर संवारी।।14।।
जनम तिथि वैराग्य सुलाई, दीक्षा पालकी इन्द्र सजाई।
सहेतुक वन अरु असन तरुवर, भये आप निर्ग्रंथ मुनिवर।।15।।
सहस्रनृपति संग दीक्षाधारी, मुक्ति पुरी की राह संवारी।
पुनर्वसु नक्षत्र सुहाना, तप कल्याणक भयो महाना।।16।।
पंचमुष्ठी कंचलौच सु कीना, धर-चरित्र दुर्द्धर तप लीना।
पंचमहाव्रत भूषण धारे, समिति पंच त्रय गुप्ति संवारे।।17।।
इन्द्रदत्त घर कियो अहारा, पञ्चाश्चर्य हुये सुर द्वारा।
ज्ञान चार युत परम पवित्रा, क्षमा, अहिंसा, संयम मित्रा।।18।।
वर्ष अठारह थे छदमस्था, वर्धमान चारित्र अवस्था।
शुक्ल ध्यान की ज्योति जलाई, क्षपक श्रेणि चढि मोह नशाई।।19।।
चार घातिया कर्म विनाशे, नंत चतुष्टय गुण परकाशे।
कार्तिक शुक्ल पंचमी आई, समवशरण धनपति रचाई।।20।।
पंच सहस धनु ऊपर राजे, कमलासन पर अधर विराजे।
पद्मासन शुभ नाशा दृष्टि, अभिनंदित है सारी सृष्टि।।21।।

चौबीस इन्द्र नमें वैमानिक, इन्द्र दशक चउ पूजे भवनिक।
व्यन्तरवासी बत्तीस इन्द्रा, तव पद पूजें सूरज चंदा।।22।।
गणधर हलधर अरु चक्रेशा, अष्टापद जो तिर्यञ्चेशा।
सौ इन्द्रों से पूज्य जिनेशा, पाप कर्म करते निश्शेषा।।23।।
इक शत त्रय गणधर अविकारी, झेली वाणी भवि अघहारी।
वज्रनाभि गणधर को नमन है, सब गणधर में ये ही प्रथम हैं।।24।।
मेरुषैणा प्रमुख आर्यिका, तैंतीस लक्ष में प्रमुख नायिका।
वज्र श्रृंखल अरु यक्षेश्वर, तव गुण गावें हे गुणधीश्वर।।25।।
भविकों को पुण्यों से भरता, प्रभु बिहार अघमल सब हरता।
ऊँकार मय खिर गई वाणी, प्राणी मात्र को जो कल्याणी।।26।।
शाश्वत गिरि सम्मेद प्रधाना योग निरोध करें चिद्ध्याना।
सुदि वैशाख सप्तमी आई, आनंद कूट से मुक्ति पाई।।27।।
वसुविध कर्म कलंक मिटाये, वसुगुण से निज आत्म सजाये।
वसु वसुधा पर आसन पाया, वसुनंदि आराध्य कहाया।।28।।
अग्निकुमार मन भक्ति आई, नख केशों की भस्म बनाई।
क्षीराम्बुधि में करी विसर्जित, पुण्य कोष शुभ किया सुअर्जित।।29।।
कैसे नंतगुणी गुण गाऊँ, सूरज को क्या दीप दिखाऊँ।
किंतु दीप भी तमस हरेगा, भक्त भवोदधि शीघ्र तरेगा।।30।।

दोहा

अभिनदंन जिनराज का चालीसा सुखकार।
हृदय धार जो नित पढ़े, पावे मुक्ति द्वार।।
विपद हरे संपति करे, पूरण हो सब काज।
भविजन भव सुख भोगकर, पावें सिद्धि ताज।।

।। इति ।।

निर्वाणकांड (भाषा)

कवि श्री भैया भगवतीदास जी

(दोहा)

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहौं कांड-निर्वाण की, भाषा-सुगम बनाय॥1॥

(चौपाई छंद)

'अष्टापद' आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौ भाव-भगति उर-धार॥2॥
चरम-तीर्थंकर चरम-शरीर, 'पावापुरि' स्वामी-महावीर।
'शिखर-सम्मेद' जिनेश्वर बीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥3॥
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नग सु तारवर' मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव-सहित कर-जोड़ि॥4॥
श्री 'गिरनार'-शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥5॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति-मँझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार॥6॥
पांडव-तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥7॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥8॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥9॥
नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥10॥

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम-हुलास॥11॥
रेवानदी 'सिद्धवर-कूट', पश्चिम-दिशा देह जहँ छूट।
द्वय-चक्री दश-कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव-पार॥12॥
'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण-दिशि 'गिरि-चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर-तर्ण॥13॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर-मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥14॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम-दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥15॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति-मँझार, ते वंदौं नित सुरत-संभार॥16॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढ़गिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित-लाय॥17॥
वंसस्थल-वन के ढिंग होय, पच्छिम-दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥18॥
जसरथ-राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि-प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान॥19॥
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज॥20॥
'मथुरापुरी' पवित्र-उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम-केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल॥21॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित-प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय॥22॥
संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥23॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घावली

वीतराग जिनगिरि से निसृत द्वादशांग जिनवर वाणी,
गणधर सूरी ज्ञान कुण्ड से झरती पीते भवि प्राणी।
मुनिराजों ने जिन्हें स्वयं ही शब्दों में लिपिबद्ध किया,
प्रथम चरण अरु करण द्रव्य को अर्घ चढ़ा हम नमन किया॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग मय सरस्वती देव्यैः नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन आचार्यों के चरणों में, झुका रहे अपना माथा।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, हो जाता निज से नाता॥
षट्खण्डागम आदि सिद्धांतों, को जिनने लिपिबद्ध किया।
पुष्पदंत, धरसेन, भूतबली आचार्यों से ज्ञान लिया॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री-धरसेन-पुष्पदंत-भूतबलि परमेष्ठिभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मरसिक सिद्धान्त मनीषी आगम के मर्मज्ञ महान,
परम तपस्वी अविचल ध्यानी निजानंद करते रसपान।
निज आतम कल्याणहेतु हम करते पूजन अरु गुणगान,
कुंद कुंद आचार्य श्री को नमन करूँ जो हैं भगवान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्मरसिक आचार्य भगवान् श्री कुंद कुंद स्वामिने अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम तपस्वी शांति सिंधु मुनि पंचम युग में तीर्थ समान,
तीर्थंकर वत् कलिकाल में जिनशासन का कर यशगान।
चक्रवती चारित्र शिरोमणि भव्यों को सत्यार्थ प्रमाण,
तीन भक्ति युत अर्घ चढ़ाऊँ पाने को समकित वरदान॥

ॐ ह्रूँ परमात्मा चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवत श्री शांतिसागरजी मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग भोग विरागी हे गुरु ज्ञान ध्यान तप लीन महान,
विषय वासना अरु कषाय से रिक्त चित्त जिनका अमलान।
पायसिन्धु को पाकर हम सब शिवमग पावें विषय नशाय,
ऐसे उत्तम मुनिपद पंकज अर्घ चढ़ाकर शीश नवाय॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य परम तपस्वी आचार्य भगवन् श्री पायसागर मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष विजेता मन के जेता सूरीवर जयकीर्ति प्रधान,
निर्विकल्प शुभ ध्यान पायकर पाया निज आतम का ज्ञान।
भाव सहित गुरु भक्ति पूजा करती पाप कर्म की हान,
जल फलादि वसु अर्घ चढ़ाकर पाएं हम भी उत्तम ज्ञान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् श्री जयकीर्ति मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजों में आप प्रमुख हैं सूरीवर जो कहलाते,
भारत गौरव जिनवृष सौरभ मार्ग धर्म का बतलाते॥
रत्नत्रय से आप विभूषित गुरू देश भूषण स्वामी,
भक्तियुत शुभ अर्घ चढ़ाकर बन जाऊँ मैं निष्कामी॥

ॐ ह्रीं परमपूज्य भारगतौरव आचार्य भगवन् श्री देशभूषण मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर कंचन थाल भराये हैं,
निज आतम के वसु गुण पाने तव पद आज चढ़ाये।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणीमात्र हितकारी हो,
सिद्ध-शास्त्र-आचार्य भक्ति युत नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-ध्यान-तप लीन निरन्तर समता रस के भोगी हैं,
विषय वासना पाप रहित निर्ग्रन्थ मुनीश्वर योगी हैं।
वसुधा के वसु द्रव्य संजोकर वसु गुण पाने आये हैं,
वसुनंदी आचार्य प्रवर को अर्घ चढ़ा हर्षाये हैं।

ॐ ह्रूँ प.पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।